## पद ७७

(राग: छंद - ताल: धुमाळी)

तुम्ही कसे हो सत्युं ज्ञानमनंतं ब्रह्म।।ध्रु.।। कोणी कोणा जाणितलें। काय स्वरूपीं मन हें झालें। कवण धर्मी कवणा आलें। ज्ञानरूप धर्म।।१।। जरि ज्ञानरूप तो असता। तरि आपणा अवलोकिता। मिथ्या त्रैकालिक जग म्हणतां। पहा हें वर्म।।२।। जेथें अनुभवविना अनुभविता। अविद् विदिताहुनी तो परता। स्फूर्ति स्फोरक स्फुरण ही सत्ता। मायिक कर्म।।३।। निर्मलपणें ज्ञान जे म्हणती। सत्य अविनाशा बोलती। सुख दु:ख सहित सांगती। सूक्ष्म ते परम।।४।। निमाला ज्ञानरूपमार्तांड। गेला मायादेवीचा बंड। सहज स्वस्वरूप अखंड। हा बोल चरम।।५॥